दृष्टि The Vision

876

सामान्य अध्ययन (टेस्ट - I)

GENERAL STUDIES (Test - I)

मॉड्यूल - I / Module - I

DTVF/17–M–**GS1**

निर्धारित समयः तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंकः 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Bikram Gangwar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनाक (Test No. & Date): 1/16-07-2017

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 4 2 3 8 3 2

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिंदी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): B

नोटः प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न हैं।

Evaluation Analysis

Introduction	Context	Content	Structure	Current Link / Examples	Conclusion	Language
B	C	C	C	B	B	C

MARKS: 5·½ /250

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

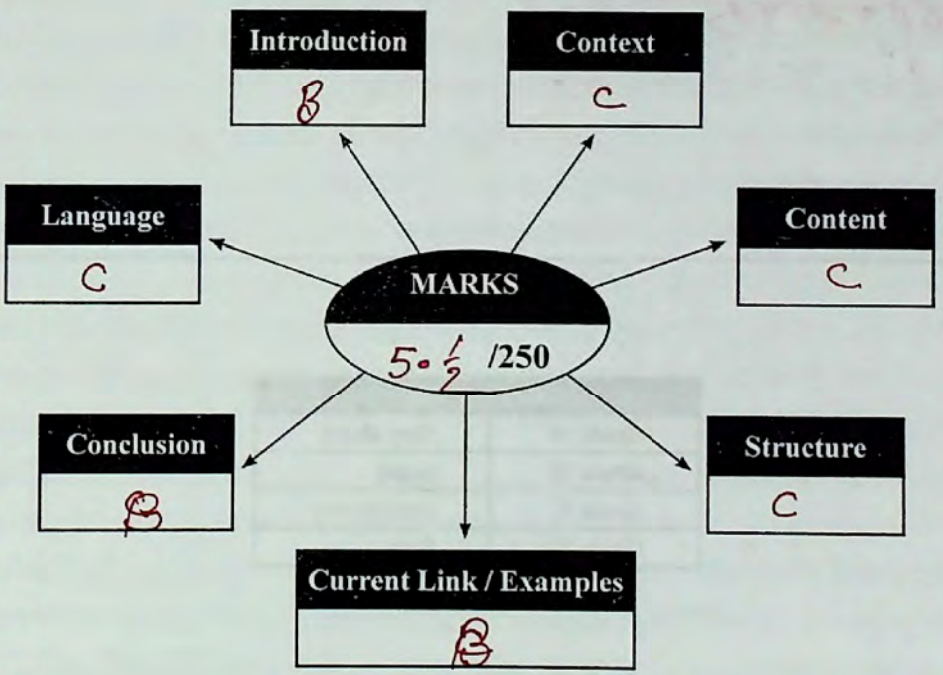

व्यापक विश्लेषण / Macro Analysis

- तत्व एवं अवधारणा के प्रस्तुतीकरण में स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।
- शब्द सीमा, शाब्दिक, मात्रात्मक त्रुटियों में सुधार कीजिए।
- प्रश्न की विषयवस्तु को ध्यान में रखकर उत्तर लिखिए।
- सूचनाओं का पर्याप्त प्रस्तुतीकरण आवश्यक है।
-

Grade Card	
Grade 'A'	Very Good
Grade 'B'	Good
Grade 'C'	Satisfactory
Grade 'D'	Poor

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. "भक्तिकाल से रीतिकाल की ओर प्रस्थान की जो झलक तत्कालीन साहित्य में मिलती है, वह वास्तव में सिद्धांत और व्यवहार में सामाजिक विचारों को दर्शाती है, जो जनता की आशा-आकांक्षाओं और चित्तवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रतिबिम्ब है।" व्याख्या कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"The glimpse of the shifting from Bhaktikal to Reetikal, which reflects in the literature of that time, actually portrays social notion in principle and practice, which is a direct reflection of the common man's expectations aspirations and imaginations." Explain. (250 words) 12.5

वास्तव में किसी देश का साहित्य वहां की जनता की ~~आशाओं~~ - आकांक्षाओं और चित्तवृत्तियां का संचित प्रतिबिम्ब होता है, जब चित्तवृत्तियां बदलती हैं उसके साथ ही साहित्य भी बदल जाता है। इसी संदर्भ में भक्तिकाल से रीतिकाल की ओर प्रस्थान वास्तव में तत्कालीन समाज में हो रहे परिवर्तनों की झलक ही है।

भक्तिकाल का समय 1350 से 1650 ई. तक माना जाता है इस समय देश में केंद्रीय सत्ता मजबूत थी तथा छोटे-छोटे राज्य ~~भी~~ स्वायत्त नहीं थे परंतु 1650 तक आते-आते स्थितियां बदलने लगी तथा औरंगजेब के बाद छोटे-छोटे राज्य स्वतंत्र होने लगे ~~कि~~ इन राज्यों में राजा ~~विलासिता~~ में डूबे थे तथा सामाजिक कार्यों से विमुख थे।

भक्तिकाल में सामंती व्यवस्था विद्यमान थी

भक्तिकालीन रीतिकालीन विशेषताओं की स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कीजिए 20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामाजिक, नारी, भेदभाव की समस्याएँ विद्यमान थी तथा हिन्दू एवं मुस्लिम संस्कृतियों का मिलन हो रहा था इन्हीं को आधार बनाकर भक्त कवियों ने साहित्य की रचना की।

परन्तु रीतिकाल के आगमन बिंदु पर जो दरबारी संस्कृति विकसित हुई उसकी झलक तत्कालीन रीतिकालीन साहित्य में दिखती है इस समय बिहारी, घनानंद, बोधा, आलम ऐसी ही रचनाएँ कर रहे थे तथा शृंगार पर पड़ा भक्ति का पर्दा उठ गया था इसलिए अब प्रेम एवं सौन्दर्य के चित्र उकेरे जाने लगे थे।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि जिस प्रकार का सामाजिक परिदृश्य होता है उसी प्रकार का साहित्य रचा जाता है एवं समाज के परिवर्तन की शक्तियाँ साहित्य को भी परिवर्तित करती है इसी संदर्भ में भक्तिकाल से रीतिकाल की ओर प्रस्थान को समझा जा सकता है।

9

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में चिह्नित करने वाले मापदंडों की चर्चा कीजिये। इस प्रवर्ग में शामिल भाषाओं का उल्लेख करते हुए इसके लाभ बताइये। (250 शब्द) 12.5

Discuss the parameters that identify a language as classical language. Describe it's benefits while mentioning the languages included in this category. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप में चिन्हित करने वाले मापदंड निम्नलिखित होते हैं –

- वह भाषा प्राचीन हो।
- उसकी अपनी एक सामाजिक व, सांस्कृतिक व साहित्यिक परम्परा रही हो।
- उसने किसी अन्य भाषा के बहुलांश तत्वों को उधार न लिया हो।

इन मापदंडो के आधार पर संस्कृत, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ एवं ओडिया 6 भाषाओं को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है।

जब किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिल जाता है तो उसके निम्नलिखित लाभ होते हैं –

- उस भाषा को ~~संरक्षण~~ संबंधी लाभ
- ~~विश्वविद्यालयी~~ स्तर पर उस भाषा की भूमिका बढ़ना
- साहित्यिक विरासत के महत्व में वृद्धि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- सरकारी प्रयासों द्वारा भाषा समृद्धि के प्रयास
- उस भाषा भाषी लोगों के साहित्यिक मूल्य का बढ़ना

इस प्रकार शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त करते ही किसी भाषा का महत्व बढ़ने लगता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. "देश का बँटवारा एक ऐसी सांप्रदायिक राजनीति का आखिरी बिन्दु था, जो 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में शुरू हुआ।" परीक्षण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"Partition of the country was the end point of communal politics that started in the last decades of 19th century." Examine. (250 words) 12.5

हमारा देश 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ परन्तु इसके साथ ही हमें विभाजन का दर्द भी झेलना पड़ा।

सांप्रदायिक राजनीति की परिभाषा के साथ शुरू लिखिए

वास्तव में अगर देखा जाये तो जिस सांप्रदायिकता के कारण विभाजन हुआ उसके बीज काफी पहले ही 19वीं सदी के अंतिम दशक में देखे जा सकते हैं।

19वीं सदी के अंतिम दशक में उग्रपंथी विचारधारा के नेताओं ने शिवाजी उत्सव, गणेश उत्सव को राष्ट्रीयता जगाने का प्रयत्न किया परंतु अनजाने में ही इससे हिंदू राष्ट्रवाद को बल मिला तथा मुस्लिम समुदाय इससे अलग होता गया।

दूसरा कारण था कि सर सैय्यद अहमद खान जैसे विचारक जो अपने शुरुआती दिनों में राष्ट्रवादी थे परंतु अंतिम समय में वह कांग्रेस को हिन्दुओं का संगठन बताकर इसकी आलोचना करने लगे तथा मुस्लिमों से अंग्रेजों का पक्षधर बनने की अपील की।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

इन सबसे बढ़कर अंग्रेजो ने इस स्थिति का लाभ उठाया तथा उन्होंने 'फूट डालो एवं राज करो' की नीति के तहत हिंदुओ एवं मुस्लिमो को लड़ाया एवं कांग्रेस के विरुद्ध मुस्लिम लीग को खड़ा कर दिया जिससे सांप्रदायिक तत्वों ताकतों को मूक सहमति मिली जिससे बंगाल विभाजन को प्रोत्साहन मिला।

इस पृष्ठभूमि पर आगे बढ़ते हुए 1930 एवं 40 के दशक में सांप्रदायिकता बढ़ती ही चली गई अंत में देश के विभाजन का कड़वा घूंट हमको इसी काल से पीना पड़ा।

1900 — 1947 तक के मध्य के महत्वपूर्ण घटनाक्रमों का उल्लेख करते हुए उत्तर लिखिए

विभाजन के पश्चात सांप्रदायिक राजनीति का स्वतंत्र भारत में निहित स्वार्थी तत्वों के द्वारा प्रयोग किए जाने का भी उल्लेख कीजिए

मॉडल उत्तर देखिए

2

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. "राष्ट्रीय आंदोलन के विभिन्न कालखंडों में किसानों की मांगों के प्रति कांग्रेस के दृष्टिकोण में भारी विविधता दृष्टिगत होती है।" स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"There is a huge diversity can be observed in the Congress's stand-point towards the demand of the peasants in different time segments of the national movement." Explain. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कांग्रेस की स्थापना 1885 में हुई थी अपनी स्थापना के समय में कांग्रेस ने किसानों की मांगो को लेकर कोई गतिशीलता प्रकट नहीं की कारण था कि इस समय कांग्रेस कुलीन एवं उच्चवर्गीय लोगों के हितों को ही उठाती थी तथा किसान वर्ग इससे जुड़ा हुआ नहीं था।

1885 - 1905 तक आरंभिक चरण में किसान समस्याओं के प्रति उदासीनता बनी ही रही समावेश यही स्थिति 1905 - 1914-15 तक दिखायी देती है परंतु जब इसके बाद गांधी जी का आगमन होता है तो किसान वर्ग ने अपने को कांग्रेस से जोड़ना शुरू किया इसी की अभिव्यक्ति चम्पारण सत्याग्रह आंदोलन में देखी जा सकती है।

साथ ही इसी दौर में संयुक्त प्रांत एवं अवध प्रांत में किसानों की मांगो को लेकर किसान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आंदोलन भी हो रहे थे।

इसके बाद असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन में किसानो की भूमिका बढ़ने लगी तभी कांग्रेस ने किसानो के मुद्दे को गंभीरता से लेना प्रारंभ किया तथा राजस्व संबंधी मुद्दों को उठाया एवं अकाल, गरीबी से पीड़ित किसानो की चिंता की।

1937 में जब विभिन्न प्रांतो में कांग्रेस मंत्रिमंडल बने तब किसानों को काफी रियायतें देने का प्रयास किया गया तथा किसानों से जुड़ी मांगो को राष्ट्रीय आंदोलन द्वारा मूर्त रूप भी दिया जाने लगा। उसके बाद लगातार किसानों की समस्याओं के प्रति कांग्रेस का नजरिया सजग रहा चाहे वह 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन हो या उसके बाद के आंदोलन।

इस प्रकार हम देखते हैं कि समय के साथ-साथ कांग्रेस का दृष्टिकोण किसानो की मांगो के प्रति बदलता रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. औपनिवेशिक अर्थतंत्र ने किस प्रकार आदिवासी विद्रोहों के प्रस्फुटन की पृष्ठभूमि का निर्माण किया? पूर्वी भारत के आदिवासी विद्रोहों का उदाहरण लेते हुए उत्तर दीजिये। (250 शब्द) 12.5

How colonial economy build background of eruption of tribal revolts? Explain above statement by citing the examples of tribal revolts in eastern India. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आदिवासी लोग दूरवर्ती क्षेत्रों में निवास करने वाले समुदाय थे जिनकी अपनी एक विशिष्ट संस्कृति एवं पहचान थी औपनिवेशिक अर्थतंत्र ने जब इनके मामलों में हस्तक्षेप किया तथा उनको नुकसान पहुँचाया तो उसकी परिणति आदिवासी विद्रोहों के रूपमें में हुई। आदिवासी विद्रोह के निम्नांकित कारण थे -

- आदिवासी लोगों की सामुदायिक सम्पत्ति होती थी परंतु अंग्रेजों ने भूमि को निजी सम्पत्ति मानकर इसे विक्रय योग्य बनाया जिससे उनकी व्यवस्थाएं भंग हुई।
- अंग्रेजों के साथ उनके क्षेत्रों में साहूकारों, महाजनों का प्रवेश हुआ जिन्होंने आदिवासियों का शोषण किया।
- अंग्रेजों ने देशी शासन पर आबकारी कर लगाये तथा जंगल तथा जमीन से बेदखल करने का प्रयास किया।
- कई आदिवासी प्रथाओं को बंद करवाया जिससे रोष बढ़ा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

③ यातायात एवं रेलवे के विस्तार से उनकी संस्कृति व समाज में हस्तक्षेप बढ़ा।

④ भूराजस्व की बढ़ती तथा बंधुआ मजदूरी आदि।

इन सब कारणों से पूर्वी भारत में आदिवासी विद्रोह फूट पड़े जैसे संथाल विद्रोह (1855-56) भागलपुर से राजमहल तक फैला रहा, यद्यपि इसे दबा दिया गया परन्तु संथाल परगना का क्षेत्र अलग से बनाना पड़ा।

इसी प्रकार मुण्डा या उलगुलान विद्रोह, जो 1895-1900 ई० तक चलता रहा इसका मूल कारण भी दिकुओं द्वारा मुण्डाओं का शोषण ही था, यह विद्रोह काफी शक्तिशाली हुआ परंतु अंग्रेजों ने इसे दबा दिया तथा बिरसा मुंडा की मृत्यु के साथ यह समाप्त हो गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अंग्रेजों द्वारा किये गये शोषण के खिलाफ आदिवासियों ने जमकर प्रतिरोध किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

9. क्या आप मानते हैं कि 18वीं-19वीं शताब्दी में शुरू हुआ भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन, भारत में राष्ट्रवाद के अंकुरण की पूर्व शर्त थी? तर्कों द्वारा अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिये। (250 शब्द) 12.5

Do you agree that the Indian renaissance movement started in 18th-19th century was the precondition for the germination of nationalism in India. Substantiate your answer with arguments. (250 words) 12.5

पुनर्जागरण का अर्थ है शिक्षा, ज्ञान, विकास संबंधी तत्वों को लेकर दोबारा जागरण। भारतीय पुनर्जागरण 18-19वीं शताब्दी की महत्वपूर्ण घटना है इससे एक तरफ समाज एवं धर्म सुधार आंदोलन को प्रेरित किया तो दूसरी ओर राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन ने निम्नलिखित प्रकार से राष्ट्रवाद को प्रोत्साहित किया —

- इससे भारतीयों में अतीत की गौरवशाली भावना का विकास हुआ
- इससे भारतीयों ने अपने समाज तथा धर्म की कुरीतियों पर चोट की तथा सुधार को प्रोत्साहन दिया
- इसी दौरान पाश्चात्य विचारों के आलोक में बुद्धिवाद, तर्कवाद एवं मानववाद को पहचाना जिनसे आधुनिक विचार पनपे।

सुधारकों [illegible] एम. जी. रानाडे, [illegible] ज्योतिबा फुले [illegible] उदाहरण [illegible]

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- इसके कारण ही राजाराम मोहन राय, विवेकानंद, स्वामी जैसे नेता उभरे जिन्होंने राष्ट्रवाद के विकास को बेहतर प्रयास किया।
- पुनर्जागरण से ही भारतीयों में एकता का विकास हुआ जिससे उन्होंने साझी विरासत, संस्कृति के महत्व को समझा।
- पुनर्जागरण काल में ही पाश्चात्य एवं भारतीय संस्कृति की टकराहट से सकारात्मक उर्जा का विकास हुआ जिससे भारतीयों ने अपना मूल्यांकन किया तथा अंग्रेजी शिक्षा, विचार तथा यातायात के नवीन साधनों का विकास हुआ।

इस तरह से समझा जा सकता है कि भारतीय पुनर्जागरण ने राष्ट्रवाद के विकास के लिए एक आधार का कार्य किया यद्यपि अन्य तत्व जैसे- अंग्रेजो की नीतियां व शोषण आदि भी जिम्मेदार थे परंतु भारतीय पुनर्जागरण एक क्रांतिकारी घटना थी।

4

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

10. "यदि भारत औपनिवेशिक शासन के दौर से नहीं गुज़रा होता, तो भारतीय समाज ने अपने मध्यकालीन जड़ता को तोड़कर आधुनिक काल में प्रवेश नहीं किया होता।" कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"If India had not passed through a period of colonial rule, then Indian society would not have broken its medieval numbers and entered into modern era." Critically examine the statement. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय एवं अंग्रेजी संस्कृति की टकराहट से भारतीयों ने जहाँ अपनी संस्कृति का मूल्यांकन किया वहीं पाश्चात्य संस्कृति के प्रगतिशील मूल्यों यथा विज्ञानवाद, बुद्धिवाद, मानववाद, तर्कवाद, विज्ञान शिक्षा आदि को ग्रहण किया। इन तत्वों को ग्रहण कर तथा अपने धर्म एवं समाज को आंदोलनों द्वारा सुधार कर भारतीयों ने आधुनिक काल में प्रवेश किया।

परंतु यह सच्चाई का एक पहलू है कि अगर औपनिवेशिक शासन न होता तो भारत आधुनिक न होता या मध्यकालीन जड़ता का शिकार होता, यदि हम विशद विवेचन करें तो पाते हैं कि भारत में मध्यकाल पतन या अवसान का काल नहीं था क्योंकि इस दौरान मुगलकाल का स्वर्णिम युग, सल्तनत काल की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

मनोरम संस्कृति, भक्ति आंदोलन ने समाज को गतिहीन नहीं होने दिया था तथा लगातार हम अर्थ आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में प्रगतिशील थे।

परन्तु इतना अवश्य था कि मध्यकाल के अंतिम चरण में भारतीय समाज में जड़ता आ गई थी तथा हम गतिहीन हो रहे थे इसी समय औपनिवेशिक शासन ने भारत की जड़ता को तोड़ा तथा भारतीयों ने पुनः नयी प्रेरणाओं को ग्रहण किया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि औपनिवेशिक शासन ने एक उत्प्रेरक का कार्य अवश्य किया परंतु ऐसा नहीं है कि हम गुलाम न बने होते तो आधुनिक ही न होते क्योंकि विश्व के कई देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं जो औपनिवेशिक दौर से नहीं गुजरे तब भी विकसित हुए एवं आधुनिक हुए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

11. "गांधी जी के अहिंसात्मक आंदोलन की तपिश ने न केवल सर्वोच्च सत्ता को वार्ता की मेज पर आने को बाध्य किया, अपितु जन-सामान्य के बीच जुझारुपन की भावना को भी तीक्ष्ण किया।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"The heat of non-violence movement of Gandhiji not only forced the supreme powers to come to the conference table, but also strengthened the fighting spirit among the common masses." Comment. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी जी का आगमन एक युगांतकारी घटना है इसीलिए उनके बाद के समय को गांधी युग कहा जाता है।

गांधी जी ने अपने आंदोलन के लिए सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह जैसे साधनों का प्रयोग किया जिसका प्रयोग गांधी जी पहले सफलतापूर्वक दक्षिण अफ्रीका में कर चुके थे। इन साधनों के द्वारा चालित अहिंसा आंदोलन ने एक तरफ अंग्रेजो को झुकने को मजबूर किया तो दूसरी तरफ राष्ट्रीय आंदोलन जन-जन तक पहुँचा।

गांधी जी के अहिंसात्मक आंदोलन के समक्ष अंग्रेज विरीह हो गये क्योंकि सत्याग्रह ऐसी प्रणाली थी जिसका उत्तर अंग्रेजो के पास भी नहीं था इसीलिए असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आदि के बाद उन अंग्रेजो, जो कहते थे हमारे साम्राज्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कथन के प्रवाह एवं स्पष्टता का ध्यान रखिए

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

में सूर्यास्त नहीं होता, को गांधी से समझौता करना पड़ा उदाहरण के लिए - गोलमेज सम्मेलन, गांधी इरविन समझौता तथा अंत में भारत की आजादी।

इसी तरह सत्याग्रह जन-सामान्य के अनुकूल था जिससे किसान, दलित, महिला, छात्र सभी आंदोलन से जुड़ते चले गये जिससे कांग्रेस का समावेशी चरित्र सामने आ सका। गांधी जी ने असहयोग आंदोलन द्वारा भय को बाहर निकाल दिया वहीं सविनय अवज्ञा द्वारा जेल जाने के भय को दूर कर दिया, उनके रचनात्मक कार्यों जैसे - चरखा, छुआछूत विरोधी कार्यक्रम, खादी आदि के कारण ग्रामीण क्षेत्रों तक आंदोलन पहुंच गया।

गोलमेज आं०, लन्दन इस तरह से हम कह सकते हैं कि 1931 गांधी ही वह व्यक्ति थे जिन्होंने सर्वोच्च सत्ता को झुकने को मजबूर किया तो आम लोगों को आन्दोलन से जोड़ा क्योंकि गांधी समन्वयवाद की बुद्धि लेकर पैदा हुए थे और भारत का लोकप्रिय

शब्द निर्धारण
पर स्पष्ट कीजिए

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

नेता वही हो सकता था जो समन्वयवादी हो।

9

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

	Introduction	Context	Content	Language	Current Link / Examples	Conclusion	Error
Marks	0.25	1.5	1.5	0.25	0.25	0.25	✓
Grade	B	C	C	C	B	B	

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

12. "प्रत्येक देश के इतिहास में एक ऐसा समय आता है जब प्रशासनिक व्यवस्था को पूर्णतया विखण्डित करके समय के अनुकूल उसकी कायापलट और पुनर्गठन करना आवश्यक हो जाता है।" लॉर्ड कर्जन के प्रशासनिक नीतियों के संदर्भ में उक्त कथन पर प्रकाश डालें। (250 शब्द) 12.5

"There comes a time in the history of every nation when a need arises to completely shatter the administrative system into pieces to makeover and overhaul it as per the need of the time." Elucidate in the context of administrative policies of Lord Curzon. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में प्रशासनिक नीतियों को समय-समय पर अंग्रेजों के द्वारा परिवर्तित किया गया जहाँ लार्ड कार्नवालिस ने सिविल सेवा, न्यायिक सुधार आदि की नींव डाली तो आगे चलकर समय-समय इसमें परिवर्तन किये गये लेकिन हमें ध्यान रखना चाहिए यह परिवर्तन भारतीयों के हित में नहीं अपितु औपनिवेशिक शक्ति ब्रिटेन के हित में किये गये इसी संदर्भ में हम लार्ड कर्जन की नीतियों को समझ सकते हैं।

लार्ड कर्जन 1899 से 1905 तक वायसराय रहा उसके काल को 'आयोगों एवं अधिनियमों का काल' कहा जाता है उसने विश्वविद्यालय अधिनियम, अकाल आयोग, प्राचीन स्मारक संरक्षण अधिनियम आदि को परिवर्तित किया परंतु उसके प्रशासनिक नीति में बदलाव की बड़ी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

घटना 1905 ई० का बंगाल विभाजन है।

कर्जन का तर्क था कि बंगाल अत्यन्त बड़ा प्रांत है इसलिए प्रशासनिक सुविधा के लिए इसका विभाजन अति आवश्यक है इसलिए उसने पश्चिमी तथा पूर्वी बंगाल दो भागों में बंगाल को बाँट दिया जबकि मूल कारण बंगाल में उभरता राष्ट्रीय आंदोलन था। इस तरह उसने अपने साम्राज्य के हितों के अनुकूल प्रशासनिक बदलाव किये ताकि ब्रिटिश सत्ता अक्षुण्ण रहे।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि लॉर्ड कर्जन ने ब्रिटिश शासन को जारी रखने के लिए समय अनुकूल प्रशासनिक नीतियों में फेर बदल किया था भारतीय हितों को ध्यान में रखकर नहीं।

रेलवे, सिंचाई, पुलिस इत्यादि क्षेत्रों के महत्वपूर्ण सुधारों का भी उल्लेख कीजिए

मुद्दे पर कितना विस्तृत ज्ञान दिया है प्रश्नानुसार आवश्यक नहीं है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

13. "वर्ष 1962 में भारत पर चीनी आक्रमण मात्र द्विपक्षीय संबंधों में तनावों का परिणाम न होकर, चीन की अंतर्राष्ट्रीय राजनीति से रिक्तता, अलगाव एवं निराशा की भी उपज थी।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"The 1962 China attack on India was not only a result of confrontation in the bilateral relations, but was also resultant of Chinese isolation, separation and disappointment from the world politics." Comment. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्ष 1962 में चीन ने भारत पर एकतरफा आक्रमण कर युद्ध को थोप दिया। यद्यपि इससे पहले कुछ मुद्दों को लेकर चीन - भारत के मध्य तनाव था जैसे - तिब्बत को लेकर, दलाई लामा को शरण को लेकर आदि। परन्तु इसके अतिरिक्त अन्य कारण इस युद्ध की जड़ में थे।

उस समय भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का नेता था तथा तृतीय विश्व में भारत की धाक अच्छी थी वहीं चीन इन बातों में अलग-थलग था इसलिए वह राजनीति से रिक्तता एवं अलगाव से ग्रस्त था इसलिए इसने भारत पर आक्रमण कर अपनी धौंस जमाने का प्रयास किया साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी।

रूस एक समाजवादी देश था तथा चीन भी कम्युनिस्ट देश था इसके बावजूद भारत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

के संबंध रूस से अच्छे थे इसलिए वह एशिया में अलग - थलग पड़ गया था। इसी तरह यू. एस. ए. का भी अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पा रहा था।

इसके अतिरिक्त एशिया की राजनीति में चीन अपने को सबसे बड़ी शक्ति के रूप में स्थापित करना चाहता था इसलिए वह भारत के प्रति आक्रामक हो गया था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि चीन-भारत तनाव के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की तत्कालीन परिस्थितियों का गलत आकलन चीन द्वारा करके भारत के साथ युद्ध आरंभ किया जिसका परिणाम दोनों के लिए ही प्रतिकूल रहा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

14. 1970 के दशक में वे कौन-सी परिस्थितियाँ विद्यमान थी जिसने एक सशक्त आंदोलन को जन्म दिया? यह आंदोलन अपने किन अंतर्निहित दोषों के कारण सत्ता का विकल्प नहीं बन पाया? (250 शब्द) 12.5

Which conditions were prevailing in the decade of 1970 that gave birth to an empowered movement? Due to what intrinsic flaws this movement could not become an alternative to power? (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आजादी मिलने के बाद लोगों को एक स्वर्णिम भविष्य की लालसा थी परन्तु उसके बाद भी परिस्थितियां निचले स्तर पर नहीं बदली इसलिए 1970 दशक के आते-आते सशक्त आंदोलन छिड़ गया। इसके कारण निम्नलिखित थे –

- राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था का सत्तावादी रूप एवं भ्रष्टाचार
- किसानों एवं श्रमिकों की गरीब हालत
- गरीबी, बेरोजगारी, अकाल, भुखमरी, कुपोषण की समस्या
- अधिकारियों का संवेदनहीन व्यवहार
- आधारभूत संरचना का अभाव - विकास का अभाव

इन परिस्थितियों के साथ ही इस समय आजादी की लड़ाई में शामिल जनप्रिय नेता उपस्थित थे जो देश को पतनशील नहीं देख सकते थे उनमें

राष्ट्रीय के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय कारकों भी आंदोलन के उदय में योगदान के लिए उल्लेख किया जाना चाहिए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सबसे आगे थे जयप्रकाश नारायण, लोहिया आदि।

1970 के दशक में एक सशक्त आंदोलन छिड़ गया परिस्थितियाँ इतनी जटिल हो गयी कि जून 1975 में आपातकाल लागू हो गया परंतु इसके बाद चुनावों में स्थापित सरकार तो गिर गई लेकिन सत्ता का विकल्प यह नहीं बन सका क्योंकि इसमें कई दोष थे –

- भविष्य की कोई संकल्पना नहीं
- नेतृत्व का अभाव
- आपसी वैमनस्य
- अवसरवादिता

इन सभी कारणों से सत्ता को स्थायी नहीं रख सके तथा एक सशक्त आंदोलन अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए समाप्त हो गया।

निष्कर्ष में आंदोलन के आने वाले समय पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभावों की भी चर्चा कीजिए।

शब्द सीमा?

3

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

15. "छोटे राष्ट्रों को भेड़ियों के आगे डालने से उनको संतुष्ट किया जा सकता है, पर वे यह नहीं समझ सके कि एक बार लहू का स्वाद चख लेने पर तृष्णा कभी पूर्ण नहीं होती, जितना तुष्टीकरण किया जाएगा, उतना ही असंतोष बढ़ेगा।" द्वितीय विश्व युद्ध के संदर्भ में उपर्युक्त कथन का विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"Throwing small nations in front of wolves can satisfy them, but they couldn't understand that after once tasting the blood, thirst can never be quenched, the more appeasement will be done, the more dissatisfaction will arise." Analyse the statement in the context of the second world war. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

द्वितीय विश्व युद्ध के समय की परिस्थितियां अत्यन्त जटिल थी उपर्युक्त कथन के संदर्भ में हम देखते हैं कि मित्र राष्ट्रों ने प्रारंभ में जो तुष्टिकरण की नीति जर्मनी के संदर्भ में अपनायी वही आगे चलकर द्वितीय विश्व युद्ध का महत्वपूर्ण कारण सिद्ध हुई।

जर्मनी में हिटलर के उदय के बाद उसने वर्साय की संधि का उल्लंघन आरंभ कर दिया तथा अपने खोये क्षेत्रों को प्राप्त करना भी परंतु इसके बाद ही हम देखते हैं कि जर्मनी ने नये क्षेत्रों पर भी कब्जा करना प्रारंभ कर दिया जैसे जब उसने आस्ट्रिया एवं चेकोस्लोवाकिया को जीता तो ब्रिटेन या अन्य मित्रो ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी तथा तुष्टिकरण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की नीति का पालन किया इसके कारण हिटलर का आत्मविश्वास बढ़ता ही गया और उसने सोचा अब यूरोप में साम्राज्य विस्तार करने पर कोई राष्ट्र उसका प्रतिरोध नहीं करेगा इसलिए उसने पोलैण्ड पर भी आक्रमण कर दिया परंतु पोलैण्ड की सुरक्षा की जिम्मेदारी मित्र राष्ट्रों की थी और इसके साथ ही मित्रों ने जर्मनी पर हमला कर दिया और 1 सितम्बर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध आरंभ हो गया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि मित्र राष्ट्रों की तुष्टिकरण की नीति ने द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

शब्द-सीमा/2

4

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि *The Vision*

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

16. "धुरी राज्यों के धराशाही होते ही मित्र राष्ट्रों के मध्य मित्रता भी समाप्त हो गई तथा उनके बीच तनाव, अविश्वास और घृणा का विकास हुआ जिसकी परिणति शीत युद्ध के रूप में सामने आई।" परीक्षण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"After the collapse of axis powers, friendship among allied powers also ended and tension, distrust and hatred developed among them that culminated into cold war." Examine. (250 words) 12.5

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मित्र राष्ट्रों में रूस, अमेरिका, ब्रिटेन एवं फ्रांस थे तो धुरी राष्ट्रों में जर्मनी, जापान एवं इटली जैसे राष्ट्र थे।

वास्तव में अगर देखा जाये तो मित्र राष्ट्रों का गठबंधन मजबूरी का गठबंधन था इसीलिए जहां युद्ध समाप्त हुआ वहीं गठबंधन टूट गया और शीतयुद्ध प्रारंभ हो गया।

मित्र राष्ट्रों में रूस पर जब जर्मनी ने आक्रमण किया तो ब्रिटेन ने दूसरा मोर्चा नहीं खोला क्योंकि ब्रिटेन जर्मनी के हाथों रूस को हारते देखना चाहता था वही अमेरिका युद्ध में फायदा तो चाहता था परंतु अपनी धरती पर युद्ध नहीं इसी प्रकार इन सभी ने आपस में गुप्त संधियां भी कर रखी थी यही कारण था कि द्वितीय विश्व युद्ध के साथ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

गठबंधन समाप्त हो गया तथा शीत युद्ध प्रारंभ हो गया जिसमें एक तरफ अमेरिका के नेतृत्व में ब्रिटेन, फ्रांस सहित पश्चिमी यूरोप के पूंजीवादी देश थे जिन्होंने नाटो, सीटो, सेन्टो जैसी संधियों की तो दूसरी तरफ सोवियत संघ के नेतृत्व में पूर्वी यूरोप के साम्यवादी राष्ट्र थे जिन्होंने वारसा पैक्ट का गठन किया।

शब्द-सीमा ?

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से 1991 में सोवियत के विघटन तक विश्व राजनीति शीत युद्ध के संदर्भ में ही चालित होती रही जो कि मित्र राष्ट्रों के अविश्वास, एवं घृणा की ही उपज था।

2

मॉडल उत्तर का अध्ययन कीजिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

17. "अमेरिकी क्रांति ने राजनीतिक अभिनव परिवर्तनों की एक शृंखला आरंभ की जो बाद के काल में अत्यंत उपयोगी साबित हुई।" विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"American revolution started a series of political innovative changes that became very fruitful in the later period." Analyse. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

अमेरिकी क्रांति 1776 ई० में घटित हुई जो उपनिवेशवाद के विरुद्ध पहली क्रांति थी तथा इस क्रांति के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका अस्तित्व में आया तथा ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त की।

इस क्रांति ने न केवल अमेरिका को प्रभावित किया अपितु इसने परिवर्तनों की शृंखला आरंभ कर दी जिसे हम निम्नलिखित प्रकार से समझ सकते है –

- इसी क्रांति के प्रभाव से फ्रांस की क्रांति संभव हुई क्योंकि फ्रांसीसी सैनिक अमेरिकी क्रांति में भाग लेकर लौटे थे।
- इससे अन्य उपनिवेशों में भी स्वतंत्रता आंदोलन प्रारंभ हो गये।
- इसने स्वयं ब्रिटेन को अपनी नीतियों में बदलाव लाने पर मजबूर कर दिया इसी क्रम में भारत में 1784 का पिट्स इंडिया एक्ट बना।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

◉ अमेरिकी क्रांति में प्रतिनिधित्व के बिना कर नहीं का नारा दिया गया कालांतर में यह नारा उपनिवेश मुक्ति आंदोलन के दौरान सब जगह दोहराया गया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अमेरिकी क्रांति भावी क्रांतियों के लिए एक प्रस्थान बिंदु साबित हुई।

शब्द-सीमा

2

3

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

18. "अगर स्टेट्स जनरल की बैठक नहीं होती तो फ्रांसीसी क्रांति की शुरूआत भी नहीं हुई होती।" उक्त कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? (250 शब्द) 12.5

"If the meeting of Estate General wouldn't held then french revolution couldn't have been started." To what extent you agree with the above mentioned statement. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

फ्रांस में तत्कालीन समय में तीन प्रकार वर्गीकरण थे जिन्हें प्रथम स्टेटस - इसमें कुलीन वर्ग शामिल थे, द्वितीय स्टेटस - इसमें चर्च पादरी शामिल थे तथा तृतीय स्टेटस - जिसमें जन सामान्य, किसान, मजदूर शामिल थे। जिसमें प्रथम दो वर्ग विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग थे वहीं थर्ड स्टेट विशेषाधिकार विहीन।

फ्रांस में निरंकुशता एवं सामन्ती व्यवस्था के कारण स्टेटस जनरल की बैठक लंबे समय से नहीं हुई थी इसलिए जब 1789 ई. में स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाई गई तो मतभेद उभर आये तथा विशेषाधिकारविहीन वर्ग ने पुरजोर विरोध किया यहीं से क्रांति की शुरुआत हुई तथा तृतीय स्टेटस के लोगों ने सत्ता पर कब्जा करने का प्रयास किया।

यह क्रांति 1789 से लेकर 1799 तक तीन चरणों में सम्पन्न हुई। परंतु इस क्रांति के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बादल तो पहले से ही घुमड़ रहे थे स्टेट्स जनरल की बैठक से तो क्रांति के बादल बरस पड़े।

2

शब्द सीमा ?

निष्कर्ष ?

मॉडल उत्तर देखिए

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

19. "यद्यपि 17वीं-18वीं सदी में इंग्लैंड में हो रहे सामाजिक, आर्थिक एवं तकनीकी रूपांतरणों ने भावी औद्योगिक क्रांति का आधार तैयार कर दिया था, फिर भी इसमें प्राणवायु का संचार भारत द्वारा ही किया गया।" टिप्पणी कीजिये। (250 शब्द) 12.5

"Though the social, economic and technical transformation in 17th-18th century England laid the future base for the industrial revolution, still the life breath came from India only." Comment. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

औद्योगिक क्रांति की शुरुआत सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में हुई जिसमें 17-18 वीं सदी में होने वाले आर्थिक, सामाजिक, एवं तकनीकी कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई -

- इंग्लैण्ड में बाड़ाबंदी कानून द्वारा पूंजीवादी कृषि का विकास हुआ तथा विस्थापित कृषक जो बेरोजगार हुए उन्होंने श्रमिक की भूमिका निभाई।
- इस समय इंग्लैण्ड में एक पूंजीवादी वर्ग था जो पूंजीनिवेश कर सकता था।
- ज्ञान-विज्ञान में नवीन तकनीकों का आविष्कार हुआ जैसे 'फ्लाईंग शटल', भाप इंजन आदि।
- यातायात एवं संचार साधनों का विकास।

ये तो कारण थे ही परंतु भारत द्वारा निर्यातित कच्चे माल ने इन उद्योगों को गति प्रदान की साथ ही भारत से धन निकासी के कारण ही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इससे इंग्लैण्ड में पूँजी संग्रह हुआ जिसने उद्योग-धंधों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

इसके बाद तैयार माल की खपत के लिए भारत एक अच्छा बाजार साबित हुआ। अतः इसलिए भारत ने इंग्लैण्ड की औद्योगिक क्रांति के लिए प्राणवायु का कार्य किया।

शून्य - सीमा 2

3

मॉडल उत्तर का अनुपालन कीजिए

7

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

20. क्या आप मानते हैं कि 'ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि' लेनिन की एक गंभीर भूल थी? तर्कपूर्ण उत्तर दें। (250 शब्द) 12.5

Do you consider 'the treaty of Brest Litovsk' was a gross mistake of Lenin? Answer logically. (250 words) 12.5

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

'ब्रेस्ट लिटोवस्क की संधि' प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हुई थी इस संधि के द्वारा ही सोवियत रूस प्रथम विश्व युद्ध से बाहर हो गया तथा इस संधि को लेनिन की एक भूल कहा जाता है क्योंकि इस संधि के द्वारा सोवियत रूस को एक बड़ा भू-भाग त्यागना पड़ा तथा इसके बाद से रूस की स्थिति भी कमजोर हुई।

परंतु जब हम सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि लेनिन की यह एक रणनीति थी क्योंकि वह प्रथम विश्व युद्ध से अपने को निकालकर साम्यवादी क्रांति को वास्तविक रूप देना चाहता था तथा देश का विकास करना चाहता था इसी उद्देश्य में उसने नई आर्थिक नीति लागू की।

इस प्रकार रूस को इससे नुकसान हुआ परंतु लेनिन की यह एक रणनीति थी।

संधि का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं की चर्चा कीजिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

*इसमें **बीस** प्रश्न हैं तथा **हिन्दी** और **अंग्रेज़ी** दोनों में छपे हैं।*

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर-पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **TWENTY** questions printed both in **HINDI** and in **ENGLISH**.*

All the questions are compulsory.

The number of marks carried by a question is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

रफ कार्य के लिये स्थान

(Space for Rough Work)

Copyright – Drishti The Vision Foundation